ओशो इंटरनेशनल मेडिटेशन रिज़ॉर्ट
पृष्ठभूमि-प्रदाता

मीडिया संपर्क: अमृत साधना
प्रेस और मीडिया
sadhana@osho.net

+91-2066019940

द मैनेजमेंट टीम
ओशो इंटरनेशनल मेडिटेशन रिज़ॉर्ट
www.osho.com

ओशो द्वारा पारंपरिक उत्सव के दिनों की विदाई

बिलकुल शुरुआत से ही ओशो उत्सव के लिए पूर्व-निर्धारित दिनों के बजाय उत्सव जीवन का ढंग हो के पक्ष में रहे हैं|

1986 में एक सार्वजनिक वार्ता में ओशो समझाते हैं कि अब से आगे नियमित उत्सव के दिन नहीं होंगे:

"मैं सभी उत्सव विदा कर देने जा रहा हूं .... प्रत्येक दिन उत्सव होगा| और क्यों एक उत्सव से राजी होओ जबकि 365 तुम्हारे हो सकते हैं!"
ओशो, *लाईट आन द पाथ*, टाक #12 - रिलीजसनेस इज इंटरवोवेन इन एक्झिसटेंस इटसेल्फ
शनिवार, जनवरी 11, 1986

"अब से हम कोई भी उत्सव नहीं रखेंगे; अब उत्सव पूरे वर्ष जारी रहेगा -- उत्सव के 365 दिन! .... और अब यह बुद्धाफील्ड की नई व्यवस्था होने जा रही है|"
ओशो, *लाईट आन द पाथ*, टाक #13 - वन आफ द मोस्ट मिस्टीरिअस फिनामेना
सोमवार, जनवरी 13, 1986

"हम उन चार समारोहों को विदा कर देंगे और पूरे वर्ष को त्यौहार बना देंगे - तीन सौ पैंसठ दिनों का त्यौहार|"
ओशो, *लाईट आन द पाथ*, टाक #28 - एक्ट एकार्डिंग टू योर इंसाइट
रविवार, फरवरी 02, 1986

इसके बाद, ओशो जबसे 1986 में मुंबई वापस लौटे, वे कभी इन “चार समारोहों” से नहीं जुड़े| अपना शरीर छोड़ने से थोड़े ही समय पहले दिसंबर 1989 की अपनी जन्मतिथि तक |

2002 में ओशो मेडिटेशन रिज़ार्ट की मैनेजमेंट टीम ने तय किया कि अब यह भरोसा करने का समय है कि आज के सहभागी पर्याप्त परिपक्व हैं कि जब *वे* आना चाहें *तब* ध्यान और उत्सव के लिए आयें| कि वे आयेंगे और उत्सव मनाएंगे बजाय *‘उत्सव’* में आने के| ताकि, आखिरकार, हम ओशो की इस संबंध में बार-बार दोहराई गयी इच्छाओं और सुझाओं को अमल में ला सकें, जो कि ऊपर वर्णित हैं|

और, विशेषरूप से, जब हम ओशो के जन्मदिन और मृत्युदिन का उत्सव मनाने पर विचार कर रहे हों, तो ध्यान देने योग्य हैं ओशो के वे शब्द जो उन्होंने कहे थे उनके बेड के ऊपर लिखे जाने के लिए जिसके नीचे उनका अस्थि-कलश है: “न कभी जन्मे, न कभी मरे”|

इति|